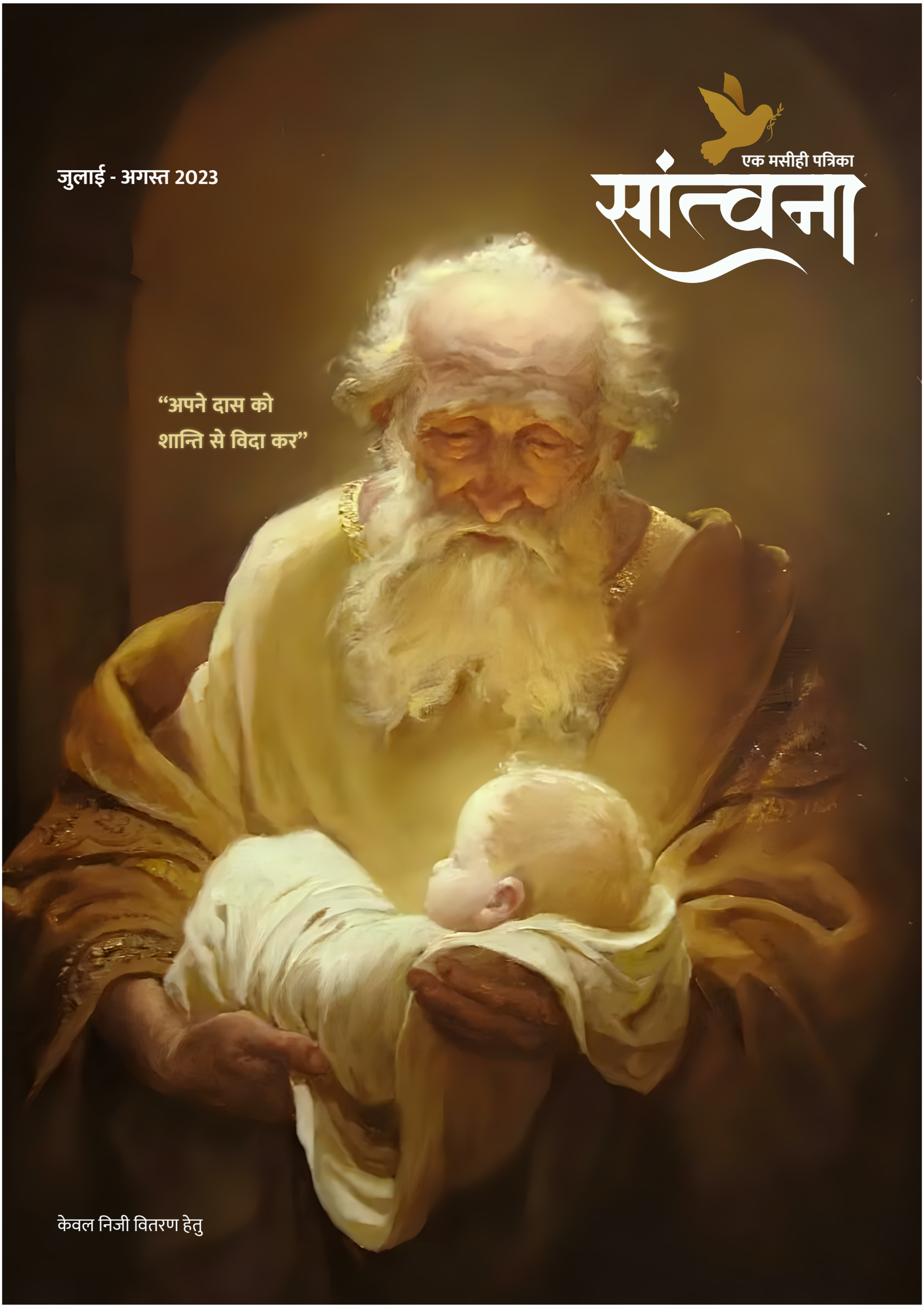

एक मसीही पत्रिका

सांत्वना

जुलाई - अगस्त 2023

"अपने दास को
शान्ति से विदा कर"

केवल निजी वितरण हेतु

संपादकीय

सम्पादक मंडल

मुख्य संपादक
अतुल्य पी. मसीह

सह-संपादक
एबी वर्गीस
जैमोन के सैम

सम्पादकीय समिति
शमूएल बी. थॉमस
सैम मैथ्यू
जेम्स पॉल
अमरजीत
बेन्नी चार्लिल

प्रसार प्रभारी
एबी जोसफ

सलाहकार समिति
टी. जे. जोसफ
सेसन अब्राहम
जोसफ वर्गीस

डिज़ाइन और लेआउट
संजय रेड्डी
प्रिंस बी. तोप्पिल

सांत्वना पत्रिका के सभी प्रिय पाठकगणों को मसीही स्नेहाभिवादन!

15 अगस्त हम सभी भारतीयों के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण दिन होता है। इस वर्ष तो हमारे देश ने 77 वें स्वतंत्रता दिवस को बड़े धूम-धाम से "आजादी का अमृत महोत्सव" के रूप में मनाया। परंतु दुख की बात है कि हमारे देश की आजादी के 76 वर्षों बाद भी हममें से बहुतों ने सच्ची आजादी के अर्थ को नहीं समझा है। स्वतंत्रता को "मनमानी करने का अधिकार" समझ लेने तथा राष्ट्र की एकता और अखण्डता को बनाए रखने के लिए अपने व्यक्तिगत, नैतिक, सामाजिक, संवैधानिक तथा आध्यात्मिक उत्तरदायित्वों के प्रति उदासीन रहने के कारण हमारे देश की वर्तमान परिस्थिति अत्यंत गंभीर और चिंताजनक बन चुकी है।

प्रभु यीशु ने स्पष्ट शब्दों में कहा, "तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा " (यूहन्ना 8:32)। हर सच्चे मसीही विश्वासी की पहचान "सत्य" को जानने, पहचानने तथा इसे अपने व्यक्तिगत विश्वास के द्वारा स्वीकार करने से होती है। अत: हममें से प्रत्येक मसीही के लिए परमेश्वर-प्रदत्त अपने विशेषाधिकारों तथा जिम्मेदारियों को समझना तथा हमें अपने देश की आशीष के लिए अपने उत्तरदायित्वों को पूरा करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

परमेश्वर का सत्य वचन (यूहन्ना 17:17) हमें पूरी स्पष्टता से इस परम सत्य को प्रकाशित करता है कि बाइबल का त्रिएक परमेश्वर - परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र, और परमेश्वर पवित्र आत्मा सत्य है (यूहन्ना 17:3; 14:6; 16:13; 15:26)। प्रत्येक मसीही विश्वासी का यह धन्य सौभाग्य है कि उसने परमेश्वर के अनुग्रह से सत्य के वचन को सुना है जो उसके उद्धार का सुसमाचार है (इफिसियों 1:13-14) तथा उस पर विश्वास करने के द्वारा वह अंधकार, असत्य, और अनंत मृत्यु से स्वतंत्रता प्राप्त कर चुका है। यही तो सच्ची स्वतंत्रता है! मसीह ने स्वतंत्रता के लिए हमें स्वतंत्र किया है, इसलिए हमें पाप और व्यवस्था के दासत्व में नहीं जुतना है (गलातियों 5:1)। परमेश्वर ने मसीह में हमें स्वतंत्र होने के लिए बुलाया है, इसलिए हमारी यह स्वतंत्रता शारीरिक कामों के लिए अवसर न बनने पाए (गलातियों 5:13)। मसीह के द्वारा और मसीह में मिली स्वतंत्रता हमें "मनमानी करने का अधिकार" प्रदान नहीं करती। सच्ची स्वतंत्रता का आनंद मसीह के एक सच्चे दास और दासी बनकर ही प्राप्त किया जा सकता है।

कितनी विचित्र बात है कि परम शाश्वत सत्य - प्रभु यीशु मसीह जब रोमी राज्यपाल पिलातुस के समक्ष खड़े हुए थे, तब पिलातुस ने उनसे पूछा था, "सत्य क्या है?" (यूहन्ना 18:38)। एक मनुष्य के लिए इस जीवन में सत्य को न जानना, सत्य को न पहचान पाना, और सत्य को स्वीकार न कर पाना इससे बड़े दुर्भाग्य की बात और क्या हो सकती है? सदियों से भारतवर्ष के ऋषि-मूनियों की यह प्रार्थना रही है, "असतो मा सद्गमय; ...।" क्या हम परम सत्य प्रभु यीशु मसीह में प्राप्त की गई स्वतंत्रता के आनंद को अपने भारतवासी भाईयों और बहनों तक पहुंचाने के लिए समर्पित हैं?
प्रभु यीशु हम सभी की सहायता करें।

अपने प्रभु की धन्य सेवा में आपका सहकर्मी-भाई ...
अतुल्य मसीह

इस अंक में

1 **अपने दास को शान्ति से विदा कर**
डॉ. कोशी मैथ्यू, मुंबई

2 **थिस्सलुनीकियों की पत्री अध्याय 3**
इव्हें. पी. बी. शमूएल, राजस्थान

3 **व्यवस्थाविवरण की पुस्तक का संक्षिप्त परिचय**
साभार - इव्हें. राज कुमार, फिरोजपुर, पंजाब

4 **"तुम मेरे गवाह होगे..."** (भाग - 2)
रॉबी थॉमस, होसूर, तमिलनाडू

5 **वरदान और प्रतिभा**
तब्बसुम रॉय पेस, भिवाड़ी, हरियाणा

6 **प्रभु के दास डॉ. ग्राहम स्टेंस की जीवनी**
साभार - इव्हें. क्रूपानंद, केरल

7 **हमारी प्रतिक्रिया ...?**
ज्योति साहू, राजनांदगांव, छत्तीसगढ़

अपने दास को शान्ति से विदा कर

डॉ. कोशी मैथ्यू, मुंबई

"हे स्वामी, अब तू अपने दास को अपने वचन के अनुसार शान्ति से विदा कर" (लूका 2:29)।

मृत्यु एक वास्तविकता है और जब संसार से विदा होने का हमारा समय आएगा तो हम सभी को इसका सामना करना पड़ेगा। भजनकार ने जीवन के क्षणभंगुर होने का वर्णन किया। जीवन घास के समान है जो सुबह उगती है और शाम तक मुरझा जाती है। हम अपने वर्ष एक कही जा रही कहानी के समान बिताते हैं। यह भाप के समान है, और धरती पर उण्डेले गए पानी के समान है जिसे फिर एकत्रित नहीं किया जा सकता है (भजन 90:5, 6, 9; याकूब 4:14; 2 शमूएल 14:14)। प्रभु ने हमारे इस पृथ्वी पर के जीवन की एक सीमा निर्धारित की है, जिसे कोई भी नहीं लांघ सकता है। "मनुष्य के दिन नियुक्त किए गए हैं, और उसके महीनों की गिनती तेरे पास लिखी है, और तू ने उसके लिये ऐसा सिवाना बान्धा है जिसे वह पार नहीं कर सकता" (अय्यूब 14:5)।

न केवल हम सम्मान के साथ जीना चाहते हैं वरन सम्मान के साथ ही मरना भी चाहते हैं। चिकित्सा शास्त्र में इन बातों से संबंधित एक विशेष शाखा है जिसे "अन्त-समय में देखभाल" (Palliative Care) कहते हैं। चिकित्सा शास्त्र के इस विभाग का उद्देश्य है कि लोगों को सम्मान के साथ विदा होने में सहायता करे। प्रत्येक मनुष्य की प्रथम यात्रा - माँ के गर्भ से बाहर संसार में आना, बहुत साहसिक और खतरनाक होती है। इस संसार से बाहर अनन्तता में जाने की यात्रा भी दुखद होती है। मनुष्य संसार में मुट्ठी भिंचे और रोते हुए प्रवेश करता है, परन्तु उसके आने से औरों को आनन्द होता है। जब वह यहाँ से जाता है तो उसके हाथ खुले होते हैं, तथा दूसरे रो रहे होते हैं। परन्तु जब धर्मी जन स्वर्ग पहुँचते हैं तो स्वर्ग में आनन्द होता है।

आरंभ में जिस पद को लिखा गया वह एक वृद्ध व्यक्ति की छोटी सी प्रार्थना का एक भाग है, जो मसीह के जन्म के समय यरूशलेम के मंदिर में रहता था। उसका नाम शमौन था, और संभवतः वह एक याजक था। परंपरा के अनुसार, वह 113 वर्ष की आयु का था। उसका जीवनकाल प्रभु की एक प्रतिज्ञा के कारण बढ़ाया गया था कि वह मसीह से मिलने से पहले मृत्यु को नहीं देखेगा। उस दिन पवित्र आत्मा उसे यरूशलेम के मंदिर में शिशु यीशु से मिलवाने लेकर आया।

जब हम वृद्धावस्था से होकर निकलते हैं, तो हमने कभी-न-कभी शमौन की प्रार्थना अपने हृदय में की होगी, "प्रभु अपने दास को शान्ति से विदा कर" (पद 29)। यह शमौन को दी गई प्रतिज्ञा थी।

इस प्रार्थना की पृष्ठभूमि समझने के लिए लूका 2:25-35 को पढ़ें। यहूदी परंपराओं के अनुसार माता-पिता शिशु यीशु को मंदिर में लेकर गए कि शुद्धिकरण की रीति के अनुसार होमबलि चढ़ाएँ। यह संभवतः उनके जन्म के 40 दिनों के बाद (लैव्यव्यवस्था 12:2-6) हुआ। मंदिर में उनकी मुलाकात दो वृद्ध लोगों से हुई, नबिया हन्नाह,और शमौन; दोनों ही प्रभु के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे।

शमौन धर्मी और भक्त था। उसे प्रभु से प्रतिज्ञा मिली थी कि वह शान्ति से विदा होगा। जो शान्ति के साथ मरना चाहता है, उसे परमेश्वर के साथ भी शान्ति स्थापित कर लेनी चाहिए। शमौन ने जीवित समय में यह सब किया था:

1. शमौन ने परमेश्वर द्वारा सभी लोगों के लिए पहले से बनाए गए उद्धार को अनुभव किया था। शमौन कहता है कि उसकी आँखों ने उसे देखा है। उद्धार का व्यक्तिगत अनुभव होने का अर्थ है मसीह को व्यक्तिगत उद्धारकर्ता स्वीकार करना। परमेश्वर ने जगत से इतना प्रेम किया कि उसने अपने पुत्र को हमारे उद्धार के लिए भेजा। इसका अनुभव करने के लिए व्यक्तिगत रीति से विश्वास करना अनिवार्य है।
2. शमौन ने पहचाना कि उद्धार यहूदियों और अन्यजातियों, दोनों को उपलब्ध है (पद 32)। मसीह में होकर यहूदी और अन्यजाति दोनों साथ मिलकर एक देह बनाते हैं जो कि कलीसिया है।
3. शमौन परमेश्वर के साथ निरंतर संपर्क में रहता था। वह पवित्रशास्त्र का अच्छा विद्यार्थी था, इसलिए वह मसीह और उसके राज्य के बारे में समझता था। परमेश्वर हम से अपने वचन के द्वारा प्रतिदिन बात करता है।
4. शमौन मृत्यु के लिए शान्ति से था। उसे कोई भय नहीं था। वह जानता था कि उसे कहाँ जाना है। हम जानते हैं कि मृत्यु के समय हमारे साथ क्या होगा। लाज़र तथा धनी व्यक्ति की कहानी में, स्वर्गदूत आए और लाज़र को स्वर्ग ले गए। हम जो मसीह में मरते हैं, हम भी शान्ति के स्थान को जाएँगे। वह एक आनन्द का स्थान है जो हमें शान्ति देगा।
5. वह आराधना करने वाला व्यक्ति था (पद 29-32)। परमेश्वर की यह इच्छा है कि हम सदा उसकी आराधना करें।
6. शमौन पवित्र आत्मा की अगुवाई में चलता था। ऐसा व्यक्ति शान्ति के साथ विदा होगा।

हम पुराने नियम में एक व्यक्ति बिलाम के विषय पढ़ते हैं जो टोन्हा करने वाला था और धर्मी व्यक्ति के समान शान्ति की मृत्यु चाहता था। परन्तु वह एक दुष्ट व्यक्ति था और वह तलवार से घात किया गया। हम क्रूस पर एक डाकू को देखते हैं जो पूर्ण शान्ति के साथ मरा क्योंकि उसने मसीह पर अपना राजा और उद्धारकर्ता होने का भरोसा किया था (गिनती 23:10; 31:8; लूका 23:39-43)।

व्यक्ति शान्ति के साथ तभी विदा हो सकता है जब वह मसीह को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार कर लेता है और परमेश्वर के साथ सदा संपर्क में रहता है। हम चाहे वृद्ध शमौन के समान विदा हों, या स्तिफनुस के समान शहीद हों, परमेश्वर में विश्वास हमें मृत्यु के समय वह शान्ति देता है जो समझ से बिलकुल बाहर है।

संतों और पापियों के अंतिम शब्द ध्यान देने के योग्य हैं, कि वे कितने भिन्न हैं:

उद्धार नहीं पाए हुए वोल्टेयर ने कहा: मैं परमेश्वर और मनुष्य दोनों के द्वारा त्यागा हुआ हूँ! उसकी सेवा करने वाली नर्स ने, जिसने उसकी मृत्यु को देखा था कहा, "मैं फिर कभी किसी परमेश्वर-विरोधी की मृत्यु को देखना नहीं चाहती हूँ।"

सुसमाचार प्रचारक मूडी ने कहा: "मैं पृथ्वी को पीछे छूटता हुआ और स्वर्ग को खुलता हुआ देखता हूँ। परमेश्वर मुझे बुला रहा है।"

डाकू की मृत्यु: वह शान्ति के साथ मरा इस भरोसे के साथ कि वह यीशु के साथ होगा, और वह स्वर्ग गया।

स्तिफनुस के शब्द: प्रभु यीशु मेरी आत्मा को ग्रहण कर।

क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे। जो मसीह में मरते (विदा होते) हैं उनके लिए क्या ही धन्य आशा है (1 थिस्सलुनीकियों 4:16-18)!

(देखिए:Harvest Times for your family Vol.16 issue 02 December 2019)

सूचकांक पर लौटें

थिस्सलुनीकियों की पत्री
अध्याय 3

इव्हें. पी. बी. शमूएल, राजस्थान

हम इस अध्याय में हम चार मुख्य बातों को देख सकते हैं:

- पहिला, पौलुस थिस्सलुनीके के विश्वासियों के लिए पूरे मन से चिंता करता है।
- दूसरा, तीमुथियुस एक विश्वासयोग्य भाई है थिस्सलुनीके के कलीसिया को स्थिर करता है और उनके विश्वास के उन्नति के सुसमाचार पौलुस के पास लेकर आता है।
- तीसरा, थिस्सलुनीके के विश्वासी लोग है जो अपने विश्वास और प्रेम को प्रगट करते है।
- चौथा, पौलुस इस खुशखबरी को सुनकर परमेश्वर को तह दिल से धन्यवाद करता और उनके लिए प्रार्थना करता है।

इन चारों में से, पौलुस के विश्वासियों के प्रति चिंता सबसे प्रमुख है। पौलुस अपने मन के इस विचारों (भावनाओं) को अलग-अलग तरीके से इस अध्याय में प्रगट करता है।

1. **पौलुस की थिस्सलुनीके के विश्वासियों के आत्मिक कल्याण हेतु असल और विश्वासयोग्य चिंता (3:1, 5)।**

   पौलुस का मन उन विश्वासियों को मिलने के लिए बहुत ही तरस रहा था। जब पौलुस बताता है "मुझसे और न रहा गया" इस से हम समझ सकते हैं कि पौलुस विश्वासियों के आत्मिक जीवन के लिए कितना चिंतित था।

2. **पौलुस उस के लिए उपाय करता है (3:2)।**

   पौलुस अपने मन की चिंता और बोझ अपने मन तक सीमित नहीं रखा। उसने अपने मन के बोझ को वास्तविकता में बदलने के लिए प्रयास किया। उस बात को व्यवहारिक रूप में लागू करने के लिए एक रास्ता ढूंढा। उस परिस्थिति में पौलुस थिस्सलुनीके में जा नहीं सकता था। इसलिए उसने अपने जीवन की सहूलियत को भूलकर तीमुथियुस को वहां पर भेजने का फैसला किया। इसलिए हमे भी हमारे मन के बोझ को वास्तविकता में बदलना चाहिए, तभी सेवकाई आगे बढ़ सकती है।

3. **पौलुस उन के विश्वास का हाल जानने के लिए उत्सुकता प्रगट करता है (3:5)।**

   थिस्सलुनीके के उन नए विश्वासियों को जल्दी छोड़कर आने के कारण, उनके आत्मिक स्थिति को जानने के लिए पौलुस उतावली में था। जिस तरह माँ अपने बच्चे की शारीरिक सलामती चाहती है, उसी तरह पौलुस अपने आत्मिक बच्चों के आत्मिक सलामती के बारे में जानने के लिए बहुत ही उत्सुक था।

4. **पौलुस उनकी वर्तमान स्थिति को सोचकर डर व्यक्त करता है (3:5)।**

   पौलुस अपना सेवकाई के फलवंतता के विषय में भी काफी चिंतित था। उसने जो समय थिस्सलुनीके में खर्च किया और जो परिश्रम वहां पर किया था, वह बेकार होते देखना नहीं चाहता था। पौलुस के मन में इस बात का डर था, कि कहीं शैतान जिसने पौलुस को वहां जाने से रोका था, वह उन विश्वासियों को भी परीक्षा करके उन्हें विश्वास से न गिरा दे।

   परीक्षा शैतान का एक प्रबल हथियार है। अदन के बाग से लेकर अब तक शैतान यह हथियार विश्वासियों और अविश्वासियों के ऊपर उपयोग करता आ रहा है। इस परीक्षा में कई लोग गिर गए, लेकिन परमेश्वर की सहायता से काफी लोग विजय पाए।

   इस अध्याय में शैतान ने सताव के माध्यम से विश्वासियों की परीक्षा की थी, लेकिन परमेश्वर के अनुग्रह से वे लोग अपने विश्वास में स्थिर रहे और उसमें बढ़ने लगे।

5. **पौलुस उनके विश्वास की बढ़ोतरी का सुसमाचार सुनकर आनंद करता है (3:6-7)।**

   तीमुथियुस ने थिस्सलुनीके जाकर उन विश्वासियों को विश्वास के सब बुनियादी और आवश्यक बातों को सिखाकर उन्हें विश्वास में स्थिर किया। सुसमाचार के शक्ति का प्रभाव उन में पहिले से प्रगट था। तीमुथियुस के वहां पर जाने से उन का विश्वास और प्रेम और भी बढ़ गया (3:6)। जब तीमुथियुस इस समाचार को लेकर पौलूस के पास आया तब उसका मन आनंद और शांति से भर गया। पौलुस इस आनंद को इस तरह बयान करता है, "अब यदि तुम प्रभु में स्थिर रहो तो हम जीवित हैं।" इस का मतलब है कि उनके आत्मिक उन्नति का समाचार पौलुस के लिए जीवनदायक श्वास की तरह था।

   यह बात हमें एक महत्वपूर्ण सच्चाई को सिखाता है। लोगों को बचाना या कलीसिया की स्थापना करना काफी नहीं है, लेकिन विश्वासियों के आत्मिक उन्नति और स्थिरता के लिए निरंतर परिश्रम करना भी जरूरी है।

6. **पौलुस उनके विश्वास और उसके प्रति उनके प्रेम को स्मरण करके परमेश्वर का धन्यवाद करता है (3:9)।**

   पौलुस का विश्वासियों के प्रति परमेश्वर को धन्यवाद देना उसका एक विशेष प्रकार की आत्मिक आदत (spiritual habit) थी। हम पौलुस की इस आदत को लगभग सभी पत्रियों में देख सकते हैं। उसकी पत्रियों से यह स्पष्ट होता है कि उसकी निजी जीवन का एक विशाल भाग, परमेश्वर से प्रार्थना और धन्यवाद देने में व्यतीत होता था।

   इसलिए हमें विश्वासियों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देने की इस आत्मिक आदत को हमारे जीवन में बनाना अनिवार्य है।

7. **पौलुस उनको मिलने की आशा रखते हुए और उनके आत्मिक उन्नति को ध्यान रखकर उन के लिए प्रार्थना करता है (3:11-13)।**

   थिस्सलुनीकियों के दृढ़ता से खड़े रहने का समाचार पौलुस को उनके पास लौटने की इच्छा से छुटकारा नहीं दे पाया। यद्यपि वे अपने विश्वास की परख का सताव झेल रहे थे उन्हें अब भी अधिक निर्देशों और उन्नति की आवश्यकता थी। वे विश्वासी लोग नये पौधों के समान थे उनकी कोमल जड़े वर्तमान तूफान में भी उन्हें दृढ़ पकड़े हुये थी। परन्तु अब भी बढ़ने और परिपक्व होने की आवश्यकता थी।

पौलुस के प्रार्थना के विषय:-

a) **पौलुस प्रार्थना कर रहा था कि वह थिस्सलुनीके वापस जा सके (3:11)।**

   यह प्रार्थना पौलुस की उन विश्वासियों को मिलने की दृढ़ इच्छा को स्पष्टता सेबताता है। पौलुस इस प्रार्थना में पिता परमेश्वर के साथ यीशु मसीह को भी बराबरी से संबोधित करता है। यह पिता के साथ यीशु मसीह के सह तुल्यता को प्रगट करता है।

b) **दूसरा विषय यह था कि उनका प्रेम बहुतायत से बढ़े और भरपूरी से बहे (3:12)।**

   मसीही प्रेम कुछ ऐसा है जो किसी व्यक्ति के भीतर से बह निकलना स्वाभाविक है। पौलुस इस बात पर बल देकर प्रार्थना कर रहा था कि उनका प्रेम सब की ओर बहे, न केवल कलीसिया में मसीहियों के लिए। पौलुस का प्रेम उनके लिए नमूना था।

c) **तीसरा विषय यह था कि परमेश्वर उनके भीतरी विश्वास को दृढ़ करे ताकि प्रभु यीशु के आगमन पर वे पिता के सामने पवित्रता में निर्दोष ठहरें (3:13)।**

   पौलुस की इच्छा यह थी कि जब यीशु मसीह वापस आए तब वह उन्हें मनुष्यों के सामने कलंकरहित और परमेश्वर के सामने पवित्र पाए।

   विश्वासी लोग इस संसार में रहते समय कभी भी पूर्ण नहीं होते, उन के जीवन में कुछ न कुछ कमी रहती है (3:10)। इसलिए यह हमारी आत्मिक जिम्मेवारी है कि हम एक दूसरे को प्रार्थना में उठाए रखे, ताकि वे अपने जीवन की कमियों को पहचाने और सिद्धता की ओर बढ़े।

हमारे जीवन को मनुष्यों के सामने कलंकरहित और परमेश्वर के सामने पवित्र रखने के लिए प्रभु हम सब को सहायता करे।

साभार - इव्हें. राज कुमार, फिरोजपुर, पंजाब

लेखक : व्यवस्थाविवरण की पुस्तक को मूसा ने लिखा था, जो वास्तव में यरदन नदी को पार करने से ठीक पहले इस्राएल को दिए हुए उसके सन्देशों का संग्रह है। "जो बातें मूसा ने कहीं वे ये हैं" (1:1)। हो सकता है, कि किसी और ने (कदाचित् यहोशू) ने अन्तिम अध्याय को लिखा होगा।

लेखन तिथि : इन सन्देशों को इस्राएलियों के द्वारा प्रतिज्ञा की हुई भूमि में प्रवेश करने से ठीक पहले 40-दिनों की अवधि में दिया गया था। पहला सन्देश 11वें महीने के 1ले दिन दिया गया था (1:3), और इसके 70 दिनों के पश्चात् इस्राएलियों ने यरदन नदीं को, 1ले महीने के 10वें दिन पार किया था (यहोशू 4:19)। मूसा की मृत्यु के 30 दिनों को घटाने के द्वारा (व्यवस्थाविवरण 34:8), हमारे पास 40 दिन बचे हुए रह जाते हैं। यह ईसा पूर्व 1410 का वर्ष था।

लेखन का उद्देश्य : इस्राएलियों की एक नई पीढ़ी प्रतिज्ञा की हुई भूमि में प्रवेश करने पर थी। इस भीड़ ने लाल समुद्र का आश्चर्यकर्म का अनुभव नहीं किया था और न ही सीनै पर दी हुई व्यवस्था को सुना था, और वे एक नई भूमि में कई खतरों और परीक्षाओं के साथ प्रवेश करने पर थे। व्यवस्थाविवरण की पुस्तक उन्हें परमेश्वर की व्यवस्था और परमेश्वर की सामर्थ्य का स्मरण दिलाने के लिए दी गई थी।

कुँजी वचन : "जो आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूँ, उसमें न तो कुछ बढ़ाना, और न कुछ घटाना; तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की जो जो आज्ञा मैं तुम्हें सुनाता हूँ, उन्हें तुम मानना।" (व्यवस्थाविवरण 4:2)

"हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है; तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना। और ये आज्ञाएँ जो मैं आज तुझ को सुनाता हूँ, वे तेरे मन में बनी रहें; और तू इन्हें अपने बालबच्चों को समझाकर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते इनकी चर्चा किया करना।" (व्यवस्थाविवरण 6:4-7)

"तब उसने उनसे कहा, 'जितनी बातें मैं आज तुम से चिताकर कहता हूँ, उन सब पर अपना अपना मन लगाओ, और उनके अर्थात् इस व्यवस्था की सारी बातों के मानने में चौकसी करने की आज्ञा अपने बच्चों को दो। क्योंकि यह तुम्हारे लिये व्यर्थ काम नहीं, परन्तु तुम्हारा जीवन ही है, और ऐसा करने से उस देश में तुम्हारी आयु के दिन बहुत होंगे, जिसके अधिकारी होने को तुम यरदन पार जा रहे हो।" (व्यवस्थाविवरण 32:46-47)

संक्षिप्त सार : इस्राएलियों को चार बातों को स्मरण रखने के लिए आदेश दिया गया था : परमेश्वर की विश्वासयोग्यता, परमेश्वर की पवित्रता, परमेश्वर की आशीषें और परमेश्वर की चेतावनियों का। प्रथम तीन अध्याय मिस्र से उनकी वर्तमान स्थिति, मोआब का दुहराव करते हैं। अध्याय 4 आज्ञाकारिता के लिए, परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य होने के लिए दी जाने वाली एक बुलाहट है, जो उनके प्रति विश्वासयोग्य था।

अध्याय 5 से लेकर 26 तक व्यवस्था का दुहराव है। दस आज्ञाएँ, बलिदानों और विशेष दिनों के सम्बन्ध में व्यवस्थाएँ और बाकी की व्यवस्था नई पीढ़ी को दी गई हैं। आशीषें की प्रतिज्ञा उन्हें दी गई हैं, जो आज्ञा पालन करते हैं (5:29; 6:17-19; 11:13-15), और अकाल की प्रतिज्ञा उनके लिए की गई हैं, जो व्यवस्था की अवहेलना करते हैं (11:16-17)।

आशीषों और शापों का विषय अध्याय 27-30 तक निरन्तर चलता रहता है। पुस्तक का यह भाग इस्राएल के सामने रखे हुए स्पष्ट चुनाव के साथ अन्त होता है: "मैं आज आकाश और पृथ्वी दोनों को तुम्हारे सामने इस बात की साक्षी बनाता हूँ, कि मैं ने जीवन और मरण, आशीष और शाप को तुम्हारे आगे रखा है; इसलिये तू जीवन ही को "अपना ले," कि तू और तेरा वंश दोनों जीवित रहें" (30:19)।

अन्तिम अध्यायों में, मूसा लोगों को उत्साहित करता है; अपने स्थान पर यहोशू को नियुक्त करता है; एक गीत को लिपिबद्ध करता है; और इस्राएल के प्रत्येक गोत्र को अन्तिम आशीष प्रदान करता है। अध्याय 34 मूसा की मृत्यु की परिस्थितियों से सम्बन्धित है। वह पिसगा के पहाड़ पर चढ़ जाता है, जहाँ परमेश्वर उसे प्रतिज्ञात् भूमि का दर्शन करवाता है, जिसमें वह प्रवेश नहीं कर सकता है। 120 वर्ष की उम्र का होते हुए भी, उसकी आँखों की दृष्टि तेज थी और उसमें जवानों वाली सामर्थ्य थी, मूसा परमेश्वर की उपस्थिति में मर जाता है। व्यवस्थाविवरण की पुस्तक इस बड़े भविष्यद्वक्ता की एक संक्षिप्त श्रद्धांजलि के साथ समाप्त होती है।

प्रतिछाया : नए नियम के बहुत से विषय व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में पाए जाते हैं। इन सब में सबसे महत्वपूर्ण मूसा की व्यवस्था को सिद्धता से पालन करने और ऐसा करने की असम्भवता को दिखाने की आवश्यकता का होना है। व्यवस्था के प्रति अपराध करने वाले — लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित करने के लिए अन्तहीन बलिदानों की आवश्यकता मसीह में "सदैव-के-लिए" एक बार किए हुए अन्तिम बलिदान में उनकी पूर्णता को पाते हैं (इब्रानियों 10:10)। क्रूस के ऊपर उसके द्वारा किए हुए प्रायश्चित के कार्य के कारण, हमें पाप के लिए अब और अधिक बलिदानों की कोई आवश्यकता नहीं है।

परमेश्वर के द्वारा इस्राएलियों को अपने विशेष लोगों के रूप में चुनना उन लोगों के चुने जाने की प्रतिछाया है, जो मसीह में विश्वास करते हैं (1 पतरस 2:9)। व्यवस्थाविवरण 18:15-19 में, मूसा एक और भविष्यद्वक्ता के आगमन की भविष्यद्वाणी करता है — अन्तिम भविष्यद्वक्ता की जो आने पर था, जो मसीह था। मूसा की तरह ही, वह अलौकिक प्रकाशन को प्राप्त करेगा और उसका प्रचार करेगा और उसके लोगों को मार्गदर्शन देगा (यूहन्ना 6:14; 7:40)

व्यवहारिक शिक्षा : व्यवस्थाविवरण की पुस्तक परमेश्वर के वचन की महत्वपूर्णता को दर्शाती है। यह हमारे जीवनों के लिए महत्वपूर्ण भाग है। यद्यपि हम अब और अधिक पुराने नियम की व्यवस्था के अधीन नहीं हैं, परन्तु तौभी हम हमारे जीवनों में परमेश्वर की इच्छा के प्रति अधीन होने के लिए उत्तरदायी हैं। सरलता से पालन की हुई आज्ञाकारिता आशीषों को ले आती है, और पाप के अपने ही परिणाम होते हैं।

हम में कोई भी "व्यवस्था से ऊपर" नहीं है। यहाँ तक परमेश्वर के द्वारा चुना हुआ अगुवा और भविष्यद्वक्ता मूसा को भी, इसकी पालन की आवश्यकता थी। उसे प्रतिज्ञा की हुई भूमि में प्रवेश करने के लिए अनुमति न देने का कारण यह था, कि उसने परमेश्वर के स्पष्ट आदेश की अवहेलना की थी (गिनती 20:13)।

जंगल में अपनी परीक्षा के समय, यीशु ने व्यवस्थाविवरण को तीन बार उद्धृत किया है (मत्ती 4)। ऐसा करने के द्वारा, यीशु ने हमें हमारे मनों में परमेश्वर के वचन को छिपा लेने की आवश्यकता को चित्रित किया कि हमें परमेश्वर के विरूद्ध पाप नहीं करना चाहिए (भजन संहिता 119:11)।

जैसे इस्राएल ने परमेश्वर की विश्वासयोग्यता का स्मरण रखा, वैसे ही हमें भी रखना चाहिए। लाल समुद्र का पार किया जाना, सीनै पर पवित्र उपस्थिति का होना, औ जंगल में मन्ने की आशीष को दिए जाने को हम सभों के लिए उत्साह के रूप में समझा जाना चाहिए। निरन्तर आगे बढ़ते रहने के लिए एक सबसे उत्तम तरीका पीछे की ओर मुड़ कर उन कुछ समयों को देखना है और यह देखना है कि परमेश्वर ने क्या किया है।

एक प्रेमी परमेश्वर का व्यवस्थाविवरण में दिया हुआ एक सुन्दर चित्र होना चाहिए जो उसकी सन्तान के साथ सम्बन्ध को रखने की इच्छा रखता है। परमेश्वर प्रेम का वह कारण बताता है, जिसमें होकर वह इस्राएल को मिस्र से "अपने सामर्थी हाथ" के द्वारा बाहर ले आया और उनका छुटकारा किया (व्यवस्थाविवरण 7:7-9)। पाप के बन्धन से छुटकारा पाए हुए होना और सर्व-सामर्थी परमेश्वर के द्वारा प्रेम किए जाने कितनी अधिक अद्भुत बात है।

सूपकांक पर लौटें

"तुम मेरे गवाह होगे..."
(भाग - 2)

रॉबी थॉमस, होसूर, तमिलनाडू

पिछले अंक में हमने प्रभु यीशु के क्रूसीकरण से पहले उनके चेलों की परिस्थिति को देखा था। अब इस अंक में हम प्रभु यीशु के क्रूसीकरण के तुरंत बाद उनके चेलों की स्थिति के बारे में संक्षिप्त में देखेंगे।

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, जब स्त्रियां प्रेरितों के लिए 'पुनरूत्थित मसीह' के बारे में एक अच्छी खबर लेकर आईं, तो उन चेलों की ऐसी तत्काल प्रतिक्रिया की उम्मीद बहुत ही कम की जा सकती है। मानवीय मानकों के अनुसार चेले बहुत जल्द ही, बहुत कुछ कर चुके थे - यरूशलेम में विजयी प्रवेश से लेकर, नए सांसारिक राज्य की अपेक्षाओं तक, एक विश्वसनीय चेले यहूदा के द्वारा विश्वासघात तक की घटनाएं चेलों की वास्तविक परिस्थिति का बयान करती हैं। उनके अगुवे पतरस द्वारा प्रभु यीशु का इनकार, प्रभु यीशु का सबसे क्रूर, अपमानजनक और पीड़ादायक क्रूस पर चढ़या जाना, खाली कब्र और पुनरुत्थान की कहानी और पुनर्जीवित मसीह का भौतिक प्रगटीकरण आदि घटनाएं उन चेलों को भ्रमित करने और अपने भविष्य को लेकर निराश होने के लिए काफी थीं।

यह स्थिति सुसमाचारों के अंतिम अध्यायों में रिकॉर्ड की गई उनकी प्रतिक्रियाओं की श्रृंखला से स्पष्ट है। लूका ने अपने सुसमाचार में दर्ज किया है कि जब स्त्रियों ने पुनरूत्थित प्रभु यीशु मसीह की खबर सुनाई, तो यह "..उन्हें बकवास लगा और उन्होंने उन पर विश्वास नहीं किया" (लूका 24:11)। मरकुस के सुसमाचार में हम देखते हैं कि शिष्यों ने "... इस पर विश्वास करने से इनकार कर दिया" (मरकुस 16:11)। पद 14 में प्रभु यीशु ने शिष्यों को "उनके अविश्वास और हृदय की कठोरता के लिए" फटकार लगाई। यूहन्ना के सुसमाचार के अनुसार, शिष्यों ने अभी तक "...पवित्रशास्त्र को नहीं समझा, कि उसे मृतकों में से जीवित होना होगा" और "तब शिष्य अपने घरों को लौट गए (यूहन्ना 20:9-10)। वे "यहूदियों के भय" (पद 19) के अधीन थे। प्रभु यीशु के चेलों के रूप में "मनुष्यों के मछुआरे" होने के पेशे से पतरस (मत्ती 4:19), छह अन्य शिष्यों के साथ मछली पकड़ने के अपने पुराने पेशे में वापस चले गया। छह चेलों का यह अनुसरण उनके नेतृत्व गुणों की पुष्टि करता है (यूहन्ना 21:1-5)। और यह सही भी है, क्योंकि पतरस को अपने परिवार की देखभाल करनी थी। उसे प्रभु यीशु को नकारने के अपने पाप पर विफलता का एहसास भी था। लेकिन प्रभु यीशु के बिना मछली पकड़ने के पुराने पेशे में उनकी विफलता ने उन्हें अपने आगे के जीवन के लिए नई दिशा प्रदान की।

शेष अगले अंक में ...

सूचकांक पर लौटें

वरदान और प्रतिभा

तब्बसुम रॉय पेस, भिवाड़ी, हरियाणा

जेसन बहुत उत्साहित था और शनिवार की प्रतीक्षा कर रहा था। यह मौका वर्ष में केवल एक बार आता है? क्या केवल वही था जो इतना उत्साहित था? नहीं, कलीसिया के हरेक सदस्य को इस मनोरंजन से भरे कार्यक्रम की प्रतीक्षा रहती थी। सही समझे, यह उनके वार्षिक पिकनिक का दिन था। वे सभी समुंद्र के किनारे पिकनिक के लिए जाने वाले थे। स्मिथ आंटी ने सभी को पहले से ही बता दिया था कि कौन क्या क्या बना कर लाने वाला है। इससे सारा बोझ एक व्यक्ति पर भी नहीं आएगा और सभी लोग तरह तरह के पकवानों का आनंद ले पाएंगे। जेसन मोहिनी आंटी के द्वारा बनाई एप्पल पाई खाने के विषय में सोच कर ही आनंदित हुए जा रहा था। उनकी एप्पल पाई को सभी कुछ पलों में ही चट कर जाते थे।

अम्मा अपनी मशहूर फ्राइड फिश ले जाने वाली थीं। यह सब सोचकर उसके मुंह में पानी आ गया। सब तरह तरह के खेल खेलेंगे और जीतने वाले इनाम भी पाएंगे। वह सभी खेल खेलना चाहता था। पिछले साल पास्टर अंकल ने उसे अचानक से एक ऐसा नया मसीही गीत गाने के लिए कहा था जिसे कोई नहीं जानता हो।

जेसन इसके लिए तैयार नहीं था। उसका चेहरा और गाल शर्म से लाल हो गए क्योंकि सभी उसकी ओर देख रहे थे। सभी उसे टकटकी बांधे देख रहे थे जब तक कि उनकी कलीसिया से एक अन्य लड़की ने नहीं कहा कि वह एक नया गीत जानती है। लोगों का ध्यान तो उधर हो गया था पर जेसन के लिए यह बड़ी घबराहट और शर्म से भरा रहा। वह जल्दी से जल्दी घर चले जाना चाहता था। इस वर्ष वह पास्टर अंकल की किसी भी चुनौती के लिए एकदम तैयार है।

समय तो अपनी गति से ही आगे बढ़ता है, आखिरकार शनिवार भी आ गया। घर में सभी जल्दी जल्दी यहां वहां भाग रहे थे। कोई भी कुछ घर पर भूलना नहीं चाहता था। बीच वहां से ढाई घंटे की दूरी पर था। यदि घर पर कुछ छूट जाता तो वे वापिस आने की स्थिति में नहीं थे। जेसन और अन्य सभी परिवार चर्च पहुंच गए और वहां से सभी एक बस में बैठ गए। उन्होंने प्रार्थना कर शुरुआत की और फिर सबसे मज़ेदार भाग शुरू हुआ, बस में गीत गाना। उन्होंने बारी बारी सभी की पसंद के गीत गाए। हैरानी की बात यह थी कि पास्टर अंकल ने जेसन को इस बार नया गीत गाने को नहीं कहा। उन्होंने उसे एक ऐसा बाइबल पद सुनाने के लिए कहा जिसे संडे स्कूल का कोई और बच्चा नहीं जानता था।

उफ्फ! जेसन फिर एक बार उलझन भरी स्थिति में फंस गया था। पास्टर अंकल उसी के साथ हमेशा ऐसे क्यों करते हैं? जेसन को हरेक व्यक्ति की घूरती हुई आंखे चुभ रही थीं। किसी तरह हौंसला कर के उसने अंकल से पूछा, "क्या मैं एक नया गीत गा सकता हूं?" सारी बस हंसी के ठहाकों से गूंज उठी। जेसन को एक बार फिर अपने कान और चेहरे पर एक गर्मी का एहसास हुआ जो उसे पिछली बार भी हुआ था। पर एक बार जब उसने अपनी मधुर आवाज़ में गीत गाना आरंभ किया तो सब मंत्र मुग्ध हो गए। जेसन को परमेश्वर की ओर से ही मधुर आवाज़ मिली थी। अब तक तुम अपनी प्रतिभा कहां छिपा कर रखे थे, बेटा? पास्टर अंकल ने बड़े प्रेम से पूछा। वह थोड़ा शर्मीला है, उसकी मां ने उसके सिर को थपथपाते हुए कहा। "जिस किसी को परमेश्वर की ओर से जो भी वरदान मिला है, उसे चाहिए कि परमेश्वर के विविध अनुग्रह के उत्तम प्रबन्धकों के समान, एक दूसरे की सेवा के लिए उसे काम में लाए" (1 पतरस 4:10)।

पास्टर अंकल ने बिना अपनी बाइबल खोले आंखे बंद करते हुए कहा। जेसन को बिल्कुल भी हैरानी नहीं हुई। यह कोई पहली बार नहीं था जब उन्होंने ऐसे किया हो। हम सभी को परमेश्वर ने वरदान के रूप में अलग अलग प्रतिभाएं दी हैं। हमें उन्हें उसकी महिमा के लिए प्रयोग में लाना चाहिए। वे जो उनका प्रयोग नहीं करते उन्हें व्यर्थ गंवा देते हैं। उन्हें एक दिन परमेश्वर के सम्मुख उसका हिसाब देना होगा। जो लोग अपने वरदान का उपयोग उसकी महिमा के लिए नहीं करते उनसे उसे ले लिया जाएगा। बस में उपस्थित सभी लोग गंभीर हो गए। उन्हें लगा कि पास्टर अंकल खुश नहीं थे। पर जेसन समझ गया कि वह क्या कहना चाह रहे थे। पास्टर अंकल ने उसे अपने पास बैठाया। और प्रेम से उसका गाल थपथपाते हुए कहा, "बच्चे! अपनी प्रतिभा को पहचानो और इसे उसकी महिमा के लिए इस्तेमाल करो। आखिरकार यह उसी की देन है और उसी के लिए है।

तो अब तुम कौन सा गीत गाकर हम सब की अगुवाई करोगे? उन्होंने हंसते हुए पूछा। "धन्यवाद के साथ स्तुति गाऊंगा...", जेसन ने मुस्कुराते हुए कहा और वे सभी जोश से भर कर प्रभु की स्तुति में लीन हो गए।

प्रिय बच्चो, यदि आपने अभी तक परमेश्वर के दिए अपने वरदान को नहीं पहचाना है तो प्रार्थना कर उससे आपकी अगुवाई करने के लिए कहें। और उसकी महिमा और स्तुति के लिए अपने वरदान का प्रयोग करें।

सूचकांक पर लौटें

प्रभु के दास डॉ. ग्राहम स्टेंस की जीवनी

साभार - इव्हें. क्रूपानंद, केरल

58 वर्षीय ऑस्ट्रेलियाई मिशनरी डॉ. ग्राहम स्टेन्स और उनके दो बेटों - 10 वर्ष के फिलिप और 6 वर्ष के तिमोथी को 23 जनवरी 1999 को तड़के सुबह दारा सिंह के नेतृत्व वाले हिंदू कट्टरपंथी संगठन, बजरंग दल के सदस्यों ने जलाकर मार डाला। डॉ. ग्राहम स्टेंस और उनके दो बेटे भारत के उड़ीसा के केंवझर के मनोहरपुर गांव में 14वें जंगल बाइबिल शिविर में भाग लेने के बाद रात को अपनी जीप में सो रहे थे। उनकी शहादत के समय डॉ. ग्राहम स्टेन्स भारत के उड़ीसा के बारीपदा में कुष्ठ मिशन के निर्देशक थे। उन्होंने "हो" आदिवासी (जनजाति) भाषा में बाइबल के नया-नियम के अनुवादक के रूप में भी अपनी सेवा दी।

डॉ. ग्राहम स्टेंस का जन्म 1941 में श्री. विलियम और श्रीमती एलिजाबेथ स्टेंस की दूसरी संतान के रूप में हुआ था। वह पामवुड, क्वींसलैंड, ऑस्ट्रेलिया में पले-बढ़े। स्टेंस के पास बहुत सारी सुखद यादें थीं, लेकिन सबसे प्रिय वह सुसमाचारीय आत्मिक सभा थी जिसमें उन्होंने 1951 में भाग लिया था जब वे 10 वर्ष के ही थे। उस सुसमाचारीय आत्मिक सभा में प्रभु के दास श्री. एलन कनिंघम प्रचारक थे। जब ग्राहम स्टेंस वहाँ खड़े होकर परमेश्वर का वचन सुन रहे थे, अचानक, एक झटके में, जो कुछ भी उनकी माताजी ने बचपन में उन्हें प्रभु यीशु मसीह के बारे में बताया था वह उनके मनों में बिलकुल तरोताजा हो गया। वे सिर्फ इतना जानते थे कि जो कुछ भी उन्हें प्रभु यीशु के बारे में बताया गया था वह सब सच था! उस दिन, नंबूर प्रेस्बिटेरियन चर्च में, अपने शांत हृदय के साथ उन्होंने अपना जीवन प्रभु यीशु को समर्पित कर दिया। उस समय उन्हें यह नहीं पता था कि परमेश्वर उन्हें भारत जाकर वहां उनकी सेवा करने का मन देंगे और उन्हें मयूरभंज, ओडिशा में गरीबों और कुष्ठरोगियों की सेवा करने के लिए बुलाएंगे।

इसके तुरंत बाद, डॉ. ग्राहम स्टेंस का परिवार कैबोल्चर और फिर ब्यूडेरेस्ट चला गया। यहीं ब्यूडेरेस्ट बैपटिस्ट चर्च में उनका बपतिस्मा हुआ था। उनका विश्वास लगातार बढ़ता गया और उन्होंने संडे स्कूल की सेवकाई के साथ-साथ 'स्क्रिप्चर यूनियन बीच मिशन' में भी सक्रिय रुचि ली। यहीं पर उन्हें पहली बार मिशनरी बनने की बुलाहट का एहसास हुआ, लेकिन उन्होंने इस बुलाहट की निश्चयता के लिए इंतजार करने का फैसला किया। उनकी मुलाकात वेरा स्टीवेंस से हुई, जिन्होंने अपना जीवन कुष्ठरोगियों की सेवा में बिताया था और उनके द्वारा बांटे गए अनुभव ग्राहम स्टेंस के लिए सशक्त रूप से चुनौतीपूर्ण बने।

परमेश्वर ने ग्राहम के मन में एक बोझ डाल दिया। इसमें कोई संदेह नहीं था क्योंकि एक शुक्रवार की सुबह उनकी भक्तिपूर्ण ध्यान-मनन के दौरान जब वे मरकुस रचित सुसमाचार पढ़ रहे थे तो उन्हें परमेश्वर की सेवा के लिए बुलाहट की फिर से पुष्टि हुई। हालाँकि उसका इरादा केवल पहले अध्याय से अधिक पढ़ने का था, लेकिन जल्द ही उन्होंने पाया कि उसकी आँखों से आँसुओं की बूंदें टपक रही थीं। जैसे ही उन्होंने पहले अध्याय के पद 35 से 42 तक पढ़ा, पवित्र आत्मा ने उन्हें कोढ़ियों के बारे में याद दिलाया - जिनका अनंत काल में जाना तय था क्योंकि वे कोढ़ी यह नहीं जानते थे कि जानवरों की तरह मरना उनके कर्मों के कारण नहीं था। वे किसी भी चिकित्सकीय देखभाल से अनभिज्ञ थे जो उनके क्षतिग्रस्त शरीर को बहाल कर सके। उन्हीं लोगों से ग्राहम स्टेंस के उद्धारकर्ता इतना प्रेम करते थे कि वे 2000 वर्ष पहले उनके लिए क्रूस पर मर गए। यह विचार कि कोढ़ी और अन्य लोग इतने महान प्रेम के बारे में जाने बगैर मरेंगे, ग्राहम स्टेंस के लिए बहुत असहनीय था।

ग्राहम को एहसास हुआ कि यह जीवन को परिभाषित करने वाला निर्णय था और इसकी भारी कीमत उन्हें चुकानी पड़ेगी। क्वींसलैंड बाइबिल इंस्टीट्यूट में दाखिला लेने से पहले उन्होंने छह साल तक क्लर्क के रूप में काम किया। एक बार फिर उन्होंने विस्तार से सुना कि परमेश्वर भारत में मयूरभंज मिशन में वेरा और अन्य लोगों के माध्यम से क्या हासिल कर रहे थे।

डॉ. ग्राहम स्टेंस ने मयूरभंज में इवेंजलिकल मिशनरी सोसाइटी में आवेदन किया। उनके एक अंकल ब्रिस्बेन में ब्रैंडन टिम्बर्स व्यवसाय के मालिक थे और यहां ग्राहम के लिए एक सुरक्षित भविष्य वाली अच्छी नौकरी थी। यद्यपि ग्राहम स्टेंस अपने अंकल से प्यार करते थे, परंतु उनका प्रेम प्रभु यीशु मसीह के प्रति और भी अधिक बढ़ने लगा था। उन्होंने यह और एक और उत्कृष्ट प्रस्ताव यह कहते हुए ठुकरा दिया, "राजा का पुत्र ही राजा का काम करेगा।" स्टेंस एक शांत, प्रखर और प्रार्थनाशील युवक थे।

1965 में ग्राहम स्टेंस ने मिशनरी बनने के लिए परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया। उन्होंने 105 साल पुराने कुष्ठ मिशन क्षेत्र में सेवा करने के लिए ऑस्ट्रेलिया के क्वींसलैंड से मयूरभंज, बारीपदा, भारत के दूर-दराज के जंगल की यात्रा की, जो मयूरभंज कुष्ठ गृह के नाम से जाना जाता है, जिसे 1895 में मयूरभंज के महाराजा श्री. राम चंद्र भंज देव द्वारा स्थापित किया गया था।

ग्राहम स्टेन्स भारत आए थे और उन्होंने कभी भी इस देश को नहीं छोड़ा। वे बारीपदा (जहाँ की जनसंख्या लगभग 1 लाख थी, यह शहर उस गांव से लगभग 250 मील दूर था जहाँ उनके दोनों पुत्रों के साथ उनकी हत्या कर दी गई थी) के बाहरी इलाके में एक क्लिनिक चलाकर, कुष्ठरोगियों की देखभाल करते थे। वहां के लोगों के लिए वे सबके अति प्रिय थे। उस क्षेत्र के सभी लोग उन्हें "साइबो" नाम से संबोधित करते थे। वे उड़ीसा के एक 'पिछड़े' इलाके में एक जर्जर साइकिल पर घूम-घूम कर वंचित लोगों की देखभाल करते थे। उन्हें न तो "सांसारिक सफलता" की परवाह थी और न ही किसी पुरस्कार की!

शेष अगले अंक में ...

हमारी प्रतिक्रिया ...?

ज्योति साहू, राजनांदगांव, छत्तीसगढ़

परमेश्वर अपने सेवकों की रक्षा करना जानते हैं।

फरीसी, शास्त्री और प्रधान याजकों ने कितनी ही बार चाहा कि वे यीशु को पकड़ें, पर ये तब तक नहीं हो पाया जब तक परमेश्वर ने न चाहा। परमेश्वर उन लोगों के जीवन की जिम्मेदारी लेते हैं, जो उनकी इच्छा के अनुसार अपना जीवन बिताते हैं। परमेश्वर जिन चीजों को लेना चाहते हैं उन्हें वो ले सकते हैं, क्योंकि हर चीज तो उन्हीं की है। परंतु जिस पर उन्होंने अपनी छाप लगाई है वो चाहते हैं कि वह स्वयं उनके पास जाए और अपने आप को उनके हाथों में सौप दे।

प्रभु यीशु ने कहा कि जिस पर परमेश्वर की छाप है उसे परमेश्वर को दो (लूका 20:25)। परमेश्वर ने मनुष्यों को अपनी समानता में बनाया (उत्पत्ति 1:26), अर्थात उन्होंने अपनी छाप हम मनुष्यों पर लगाई है। जब हमने प्रभु यीशु पर विश्वास किया तो पवित्रआत्मा की छाप हम पर लगाई गई: "और उसी में तुम पर भी जब तुम ने सत्य का वचन सुना, जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है, और जिस पर तुम ने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी" (इफिसियों 1:13)। हम परमेश्वर के हैं, परमेश्वर हमें स्वयं ही ले सकते हैं, पर वो चाहते हैं कि हम अपनी इच्छा से उनके पास जाएं। यह परमेश्वर की नम्रता और प्रेम का परिणाम है। वही व्यक्ति मनुष्यों के भय से आजाद हो सकता है जिसने अपने प्रति परमेश्वर के इस प्रेम को समझा है तथा जिसके जीवन में परमेश्वर का भय है।

कुछ लोग थे जो प्रभु यीशु को पसंद नहीं करते थे, इसलिए वे प्रभु को पकड़ कर उन्हें मार डालना चाहते थे। वे लोग ये काम अक्सर इसीलिए नहीं कर पाते थे क्योंकि उन्हें लोगों का डर था और बहुत से लोग प्रभु यीशु को मसीहा मानते थे। उन्हें लगता था कि प्रभु यीशु ही वो मसीहा हैं जो उन्हें रोम की गुलामी से आजाद करते। कुछ लोगों के लिए प्रभु यीशु एक भविष्यद्वक्ता थे। कुछ लोग यह पहचान गए थे कि प्रभु यीशु 'परमेश्वर का पुत्र' हैं। लोगों के अंदर प्रभु यीशु की एक अच्छी छवि थी इसलिए यदि उनके साथ बुरा किया जाता, तो लोग क्रोधित हो जाते। शास्त्री, फरीसी, प्रधान याजक और सदूकी प्रभु यीशु को नहीं पकड़ पाते थे क्योंकि उन्हें मनुष्यों का डर था। वे जानते थे कि यदि उन्होंने प्रभु यीशु को पकड़ा तो लोग उन्हें पकड़ेंगे। मनुष्यों से डर के कारण उनमें परमेश्वर का भय नहीं था। प्रभु यीशु को न पकड़के का कारण मनुष्यों का डर (लूका 20:19) था, जबकि प्रभु यीशु को पकड़ने का विचार उनमें परमेश्वर का भय न होने को दर्शाता है। हमारा जीवन मनुष्यों के डर से आजाद रहेगा यदि हम परमेश्वर का भय रखना सीख जाएं। जब परमेश्वर का भय हमारे जीवनों में रहता है तो हमारे विवेक में हियाव रहता है, हम कोई गलत काम नहीं कर सकते, और सही काम करने से पहले मनुष्यों का डर हमें नहीं घेर सकता।

हमनें जो बीज बोया है, हमें उसकी फसल काटनी ही है। हम इससे भाग नहीं सकते और उस व्यक्ति को खत्म करके जो हमें उस फसल की सच्चाई बता रहा है, उस फसल को खत्म नहीं कर सकते। इसलिए सच्चाई बताने वाले से नफरत करना कोई हल नहीं है, सुधार को नकारात्मक तरीके से लेना हमारी और भी अधिक हानि का कारण बनता है। सुधार को सकारात्मक तरीके से लेकर कम से कम अब हमें अच्छे बीज बोना आरम्भ करना चाहिए ताकि हम आगे को एक अच्छी फसल काट पाएँ।

प्रभु यीशु ने एक दृष्टांत दिया जिसमें उन्होंने लोगों को वह बात बताई जो दरअसल उन्हीं के कार्यों का परिणाम था, और उसे सुनते ही लोगों की प्रतिक्रिया यह थी कि "परमेश्वर करे ऐसा न हो" (लूका 20:16)। और जब शास्त्रियों और प्रधान याजकों को ये समझ आया कि प्रभु यीशु यह बात उनके विरोध में कह रहे हैं तो उन्होंने प्रभु यीशु को पकड़ना चाहा। प्रभु यीशु तो बस उन्हें उस सच्चाई को बता रहे थे जो घटित होने वाला था। प्रभु यीशु से नफरत करने से वो परिणाम बदलने वाला नहीं था! उनकी प्रतिक्रिया प्रभु यीशु के प्रति नकारात्मक थी! हमारे जीवन में हमें इस बात के विषय में सोचने की आवश्यकता है कि कहीं हम अनजाने में ही हमें सच्चाई बताने वालों से नफरत करने के द्वारा शास्त्रियों और फरीसियों का पीछा तो नहीं कर रहे हैं।

प्रभु यीशु से बात करने के लिए जिन लोगों को भेजा गया उन्हें धर्म (धार्मिकता) के भेष में भेजा गया (लूका 20:20,21), अर्थात ऊपर से तो कुछ और दिख रहे हैं, पर अंदर से कुछ और ही हैं! वो लोग जो नज़र तो भेड़ के समान आ रहे हैं, पर भीतर से फाड़ने वाले भेड़िए हैं। लोग ऐसे भी होते हैं जिनके अच्छे शब्दों के पीछे इरादे बुरे होते हैं, जिनसे हमें सावधान रहने की आवश्यकता है।

प्रभु यीशु को न लोगों की आलोचना प्रभावित कर पाती थी, और न ही लोगों के द्वारा की गई तारीफ। एक व्यक्ति जो अपना क्रूस उठा कर जा रहा हो, उसे इससे क्या फर्क पड़ेगा कि उसकी आलोचना हो रही है या उसकी तारीफ हो रही है? उसे तो बस कुछ ही समय में मरना है। प्रभु यीशु ने हर दिन अपना क्रूस उठाना सीखा था, और हमें भी उनसे बस यही आज्ञा मिली है कि अपना क्रूस उठाओ और मेरे पीछे हो लो। इसलिए जब हम प्रभु यीशु के पीछे जा रहे हैं तो न हमें लोगों की आलोचना प्रभावित करनी चाहिए और न ही उनके द्वारा मिलने वाली प्रसंशा। हमें हमेशा ऐसे लोगों से सावधान रहना है जिनके शब्द तो बड़े मधुर हैं, परंतु उन शब्दों के पीछे उनके इरादे बुरे हैं।

प्रभु हम सभी की सहायता करें कि जब हम भेड़ों की नाईं भेड़ियों के बीच में भेजे जाते हैं, तो हम सांपों की नाईं बुद्धिमान और कबूतरों की नाईं भोले (मत्ती 10:16) बनने पाएं।

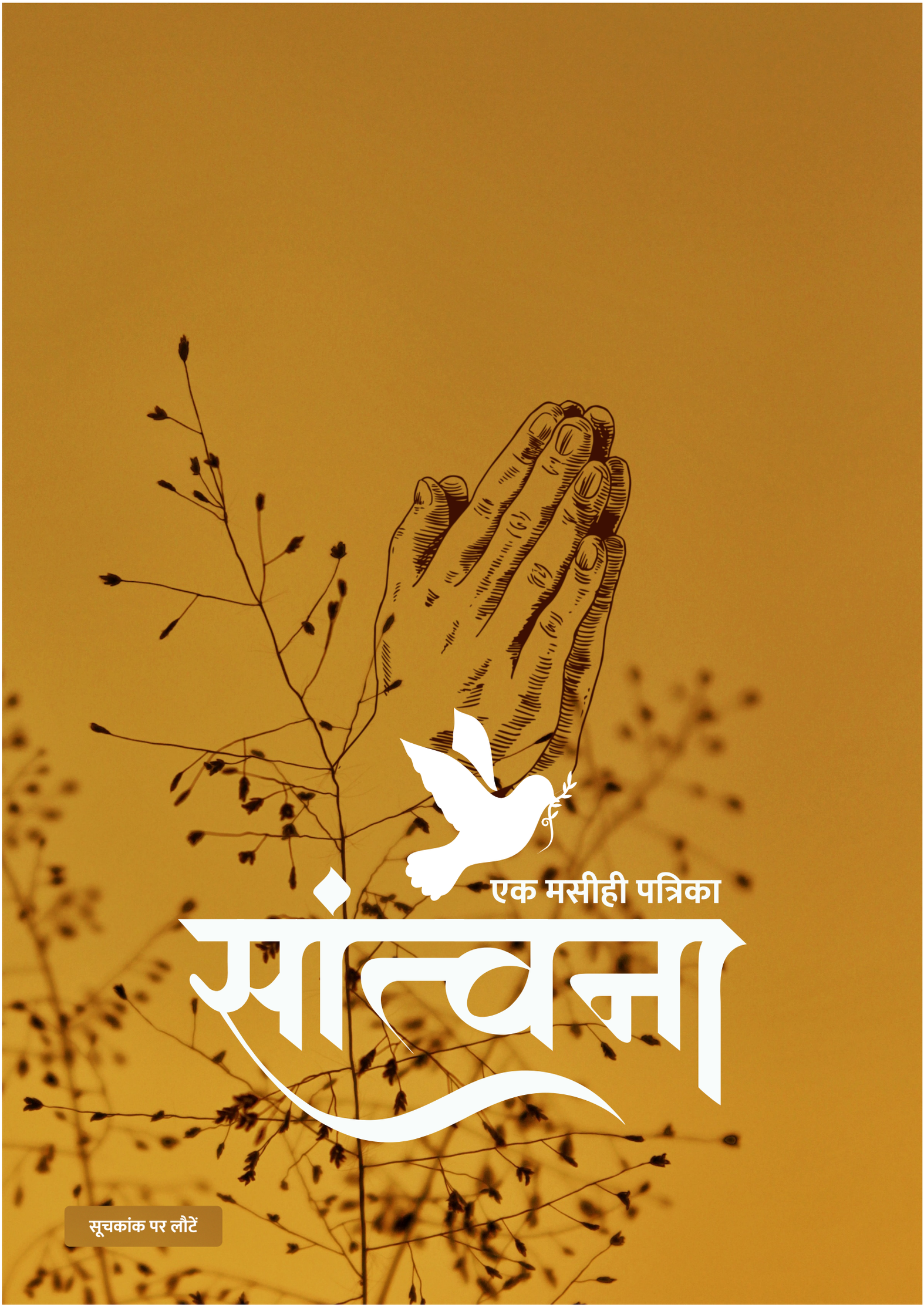

एक मसीही पत्रिका

सांत्वना

सूचकांक पर लौटें